Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 5.110 (2017) April Special 2018, Vol. II

'छत्तीसगढ़ी दान-लीला' की व्याख्या व समालोचना

डॉ. रमेश टण्डन*

प्रस्तावना – पं0 सुन्दर लाल शर्मा विरचित 'छत्तीसगढ़ी दान लीला' को छत्तीसगढ़ी का प्रथम खण्ड काव्य कहा जाता है। शृंगार रस से ओत-प्रोत इस काव्य में श्री कृष्ण की लीला का वर्णन किया गया है। कवि सर्वप्रथम श्री कृष्ण भगवान के चरणों में अपना शीष झुकाते हुए प्रणाम करता है, फिर उनकी प्रियतमा राधा के माध्यम से श्रीकृष्ण चरित्र का गुणगान करता है।

'राधा गोठ' में कवि ने लिखा है कि, 'आ दिन ले.....किरिया तोर', जिसके अनुसार, राधा अपनी सखी से कहती है कि हे सखी! तुम्हारी कसम खाकर कहती हूँ कि जब से राजा नन्द के सुपुत्र श्रीकृष्ण को मैंने गली में खड़े देखा है, तब से मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है।

सवैया- 'सुन आज.....बताइस ओ' में राधा आगे कहती है कि हे सखी! मैं आज अपने घर के दरवाजे पर जब खड़ी थी, तभी माता यशोदा का पुत्र श्रीकृष्ण आया, मुझे देखकर हंसा और भौंह को तिरछा करके मुझे चिढ़ाया। लज्जा त्याग कर उसने मुझे दौड़कर गले लगाया फिर दौड़ कर दूर भाग गया। इस तरह, गायों के झुण्ड को हांकने वाले ग्वाल बालों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण आज फिर ठेंगा दिखाते हुए मुझसे दूर भाग गया।

'खरिखा में लरिका.....परतेव तोरेच पांय' के अनुसार, गायों के झुण्ड को ले जाने वाले लड़कों (ग्वालों) के साथ राजा नन्द के पुत्र को जब से मैंने देखा है, तब से, जिस तरह चरखा का चक्का घूमता है, उसी तरह मेरा मन घूम रहा है, विचलित हो रहा है। हे सखी! कुछ भी उपाय करके मुझे श्याम (श्रीकृष्ण) से मिला दो, इसके लिए मैं रात-दिन आपके पैर धो-धोकर प्रणाम करूँगी।

'जबले सपना.....मेर लुकाओ नहीं' में राधा कहती है, जबसे मैंने उन्हें (श्रीकृष्ण को) सपना में देखा है, तब से मेरी आँखों से नींद चली गई है, चैन उड़ गया है। जवानी की आग से मैं झुलस रही हूँ। दिन-रात दुख सहते हुए परेशान हो गई हूँ। हे सखी! क्या उपाय करूँ ? गहरे पानी में डूबकर मर जाऊँ ? मुझे कोई उपाय सूझ नहीं रहा है। विरह का कष्ट गोदना की तरह कष्टदायक हो गया है। जब से श्रीकृष्ण ने अपने सिर में मयूर पंख को धारण किया है, गले में जंगली फूलों की माला को पहना है, हाथ में दुपट्टा, शरीर में पीला वस्त्र धारण किया है, उसकी सुन्दरता देखते ही बनती है। इस सुन्दर वेश-भूषा में मैंने जब से उन्हें चलते हुए देखा है, बगीचे की तरफ जाते हुए निहारा है, तब से, हे सखी। मैं बावली हो गई हूँ, मुझे कुछ याद नहीं रहता, मैं अचेत-सी हो गई हूँ। खाना भी नहीं सुहाता मुझे। हे सखी। मैं तुझे बढ़ा कर नहीं बता रही हूँ, ये सभी सच है, किसी भी बात को मैं तुमसे नहीं छिपा रही हूँ।

'नन्द नँदिया.....कइसे निभाहौं गोई।।' यहाँ पर राधा कहती है, राजा नन्द के बेटा को जब से मेरी आँखों ने देखा है, तब से मैं उसे थोड़े-से समय के लिए भी नहीं भूली हूँ, मेरी आँखों के सामने वे हमेशा दिखते हुए प्रतीत होते हैं। जब मैं कान लगाकर ध्यान से सुनती हूँ, तब मुझे उनकी घुँघरू की आवाज सुनाई देती है। मैं मन-ही-मन डर जाती हूँ कि कहीं हरि श्री कृष्ण ने मुझे कुछ कर तो नहीं दिया, मेरे मन को तो चुरा ही लिया है, लगता है, उन्होंने मुझ पर मोहिनी डाल दिया है। हे सखी! कब क्या हो जाएगा मुझे, कौन जाने ? इस जवानी को कैसे सम्भालूँ ?

'देखे बिन.....मथुरा जी के घाट'।। राधा कहती है, अब तो नन्दलाल को देखे बिना बिल्कुल भी रहा नहीं जाता। जाति-समाज के बंधन के भय को त्याग कर मोहन के पास जाना ही है। सखियों ! आज वृन्दाबन के रास्ते पर चलें और मथुरा के घाट पर दही बेचें।

'जतका दूध दही.....गोंदा खोंचे गजरा डारें'।। राधा सहित सभी गोपियों ने दूध, दही व मलाई को अलग-अलग पात्रों में सुविधानुसार एकत्रित किया, टोकरी के बीच सुरक्षित रख सभी निकल पड़े। सभी की उम्र लगभग वैसे ही समान थी, जैसे धान मिसाई के समय उपयोग किए जाने वाले बैलों की उम्र समान रहती है। उन गोपियों में कोई लम्बी, कोई छोटे कद की, कोई पुतली (खिलौने) की तरह चौड़ी, परन्तु सभी की उम्र लगभग पन्द्रह, सोलह व बीस के आसपास, सभी आँखों में काजल लगाए, दुपट्टा डाले, बालों को अच्छे से कंघी कर बांधे हुए, पैरों में लाल रंगाए, मुँह में पान दबाए, माथे पर टिकुली लगाए, बाल को बड़ा व टेढ़ा रूप में बांधकर जिसमें गेंदा व गजरा लगा है, वृन्दाबन के रास्ते जा रहे हैं।

'पहिरे रंग रंग.....खुटुवा कोनो पटाही।।' गोपियों का सौन्दर्य वर्णन करते कवि आगे कहते हैं, सभी ग्वाल बालाएँ किस्म-किस्म के आभूषण पहने हुए हैं, उनका कोई भी अंग बिना आभूषण का नहीं है। दोनों पैरों में किसी ने पायल, तो किसी ने तोड़ा पहन रखा है। किसी ने गठिया, तो किसी ने चूड़ा पहना है। कुछ गोपियाँ घुँघरू पहनी हैं, जिसे छन-छन बजाते चली जा रही हैं। सभी की कलाइयों से चूड़ियों की खनकती आवाज आ रही है। उनके हाथों में कंगन भी शोभायमान हो रहा है। बहुंटा और पछेला भी उन्होंने धारण किया है। अपनी पसंद के अनुसार सभी ने आभूषण पहना है। किसी ने बिल्लौरी चूड़ी, तो किसी ने रतनपुर की पीले रंग की बिंदिया, कोई छुप्पा, कोई पीले रंग की पटली, हरे रंग की धूपाही, तो कोई खुटुवा कोई पटाही धारण किए हैं।

'करधन कंवरपटा.....मोती हीरा लाल'।। राधा सहित सभी ग्वालिन कमर में करधन पहनकर हाथियों की तरह मदमस्त चाल में चली जा रहीं हैं, इस स्थिति में उनके द्वारा धारण किए गए हीरा, मोती आदि जवाहरात उनके शरीर से लटकते हुए दिखाई दे रहें है।

'पैंड़री पैंड़री.....केरा असन देखाय'।। राधा और सभी

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया, जिला- रायगढ़ (छ.ग.) भारत

गोपियों के गौर वर्ण शरीर सबको घायल कर देने वाला है। श्याम (श्रीकृष्ण) से मिलने की खुशी में सभी हर्षित और उमंग से भरपूर हैं। दूध, दही व मलाई से पात्रों को भरकर अपने मोहल्ले से बाहर निकलती हैं। कवि उनकी सुंदरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस समय उनके खुले हुए जांघ केला की तरह दिखाई दे रही हैं।

'साम्हू में सूंटी.....पांचू पाही जायेव।। राधा व सभी गोपियाँ वृन्दाबन पहुँच जाती हैं, तब सामने श्रीकृष्ण लकड़ी की छड़ी लेकर खड़े हुए दिखाई देते हैं। आगे हरि श्रीकृष्ण, पीछे गोपियाँ हैं।

'तुमला आज जान.....भोगचन्द बन आयेव ।। राधा व गोपियों से मिलने पर श्रीकृष्ण कहते हैं, आज मैं आप लोगों को तभी जाने दूंगा, जब मुझे सभी दिन का दूध, दही व मलाई मिल जाएगी। रोज प्रातः मैं मथुरा आता था, रात होने पर ही वापस जाता था। कुलीन परिवार में जन्म लेकर भी मुझे चोरों की तरह काम करना पड़ता था। श्रीकृष्ण की बातों को सुनकर सभी गोपियाँ रूठ जाती हैं और कहती हैं- हे श्याम। कब से आप अच्छे हो गए, चोरी करते आपकी उम्र बीत गई, ऐ मोहन। चोरी में ही छोटे से बड़े हुए, और आज ऐसा कह रहे हो, हम पर चोरी का इल्जाम लगाते हो। चोर तो आप हो, आपके सभी संगी-साथी चोर हैं, आपके गुरु भी चोर हैं। इसके अतिरिक्त कल रोते हो, आज भुला देते हो और अभी- अभी भोगचन्द बनकर खाने के लिए आ गए हो।

'उटका पंची.....जाहौ झकमारा।।' गोपियाँ कहती हैं, जिस तरह उड़ता पक्षी एक जगह को झटककर (छोड़कर) दूसरी जगह पर उड़कर चली जाती है और पहली जगह रिक्त (बेकार) हो जाती है, उसी तरह हम भी यहाँ से झटककर चले गए तो हे कृष्ण। आप भी झक मार के रह जाओगे, हाथ कुछ नहीं आएगा

'बघवा हाथी लादे.....स्यामजगात जवानी।।' गोपियों की बात सुनकर श्रीकृष्ण ने कहा, बाघ भर, हाथी भर माल लाद के लाते हो और खाली ठेंगा दिखाते हो। किश्म- किश्म के माल रखे हो और कहते हो कि कुछ नहीं है। तुम्हीं लोग बताओ कि ऐसे में कैसे बनेगा, थोड़ा माल रखे होते तो कोई बात नहीं। मोती, केला, कंवल लाद के लाए हो, सोने का हण्डा गड़ा के रखे हो, समुद्र भी पास है। कबूतर, तोता व पंडकी भी है, कुंदरू व अनार भी है। सूरज, चंदा भी है, सभी ने सर्प भी पाल रखा है। इन सभी को आज मुझे दे जाना। श्री कृष्ण की ऐसी बातों को गोपियाँ व राधा सुनकर आश्चर्यचकित हो गई और एक सखी दूसरी बड़ी सखी से कहती है कि ऐ जेठानी! देखिए तो कोई ऐसे कहता है क्या ? स्याम हम जवान गोपियों से ऐसे कहकर मांग रहा है।

'पहिरव ओढ़व.....गोकुल के बसवारा।।' गोपियाँ अपनी भड़ास निकालती हुई कहती हैं कि जो अच्छा पहनता, ओढ़ता है, वह भी हमसे भिड़ जा रहा है, हे सखी। गोकुल में बसने वाले ऐसे लोग, काश जल जाते।

'बघवा बन के.....बिगर सब जाहौ।।' गोपियाँ कहती हैं, ऐ सखियों। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हमारे पास बाघ है, आप ही बताओ, भला कोई बाघ को पकड़कर- बांधकर रख सकता है ? क्या-क्या बोलकर हमें डराता है। अब हाथी को हम कहाँ छिपा सकते हैं ? सोने का हण्डा हमें कहाँ से मिला ? कोई समुद्र को ला सकता है क्या ? और ले भी आए तो उसे रखें कहाँ ? स्वर्ग के चाँद-सूरज को कोई यहाँ कैसे रख सकता है ? कुंदरू व अनार कहाँ उगा है ? कबूतर, तोता कहाँ उड़ गए ? मोती, केला, कंवल कहाँ हैं ? कुछ भी तो नहीं है। श्रीकृष्ण क्या-क्या बोलता है ? हमें धनुष- बाण बताता है। विषधर सर्प को हमने कहाँ पहुँचा दिया ? और हम उसे कैसे लाए ? हे कृष्ण। हमें ले जाकर इन सब के बारे में बताओ कि ये सब कहाँ गए ? वरना बात बिगड़ जाएगी।

'सुनत बात मुसकाइन.....बताहौं सुनत लजाहौ।।' इन सब बातों को सुनकर मोहन श्रीकृष्ण मुस्कुराए और बोले कि हम झूठ नहीं बोलते। केला आपकी जांघें हैं। आपके नैन, मोती के समान हैं। कोई भी अंग तुलना के लिए शेष नहीं बचे। कंवल के बराबर हाथ दिखाई देते हैं। सोने की हण्डी की तरह आपकी लजाती हुई छाती है। पेट समुद्र है, गला कबूतर के समान, ओष्ठ कुंदरू है तो दांत अनार हैं। सूरज- चाँद मुँह के भीतर, तिरछे भौं कमठा की तरह। मेरे संगी- साथी इस बात के गवाह हैं कि आपकी आँखें चंचल मछली की तरह हैं। तोते के समान नाक, बाल की चोटी सर्प की तरह पीछे लटकी है। अभी दो अंगों का वर्णन शेष है, जिसे खुलकर बताऊँगा तो सुनकर आपको लज्जा आएगी।

समालोचना -

1. **भगवान श्रीकृष्ण के प्रति चारित्रिक आस्था -** भगवान श्रीकृष्ण की चरित्र गाथा को व्यक्त करने के पहले कवि ने उसे पूरे संसार का स्वामी बताते हुए अपना सिर उसके चरणों में झुकाता है और कहता है, 'जगबिरचर के पौत मैं, आपन मूड़ नवाया सिरी कृष्ण भगवान के, कहिहौं चरित सुनाया।।'

2. **राधा का अपनी सखी के प्रति कथन -** राधा अपने मन की बात को अक्सर अपनी सखी के साथ साझा करती हुई कहती है, 'जा दिन ते नन्द लाल ला, ठाढ़े देखेव छोर। कांही नही सुहावै, मोई। किरिया तोरा।।'

3. **राधा व गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति कथन -** राधा और गोपियाँ, श्रीकृष्ण के बिना नहीं रह पाती हैं। उससे मिलने की इच्छा तीव्र हो जाती है। एक दिन पात्र में दूध, दही व मलाई भरकर श्रीकृष्ण के मिलने वृन्दाबन जाती हैं, तब श्रीकृष्ण उन्हें खरी-खोटी सुनाते हैं और बहुत सारे माल रखे हो, कहते हैं। इसी के जवाब में गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति कथन का उजागर होता है- 'कइसे-कइसे के गोठियाथैं, हमला कमठा तीर बताथैं, बिखहर सांप कहां पहुंचायेव, तेला हम कइसे के लायेन, झरा झरती लेय बताहै, नहि तो बात बिगर सब जाहै।

4. **श्रीकृष्ण का राधा व गोपियों के प्रति कथन -** श्रीकृष्ण से जब राधा और गोपियाँ मिलने जाती हैं, तब श्रीकृष्ण समस्त दूध-दही-मलाई आदि को छोड़ जाने के लिए कहते हैं- 'तुमला आज जान तब देहौं, जब सबा दन के सेती लेहौं। आगे कहते हैं कि तुम लोगों के पास मोती, सोना, कबूतर, कंदरू, सूरज, चंदा, सांप आदि हैं जिसे मुझे दे दो- 'कुंदरू दरमी धनुवा लायेव, सूरज चंदा धलो लदायेव, सौंप धलाय सबो पोषै हो, सबो जगात आज मोर देहौ। अंत में गोपियों के समस्त अंगों की तुलना केला, सोना की हण्डी, कुंदरू, सांप, मछली आदि से करते हैं।

5. **राधा के सपने में श्रीकृष्ण का आना -** राधा सपने में श्रीकृष्ण को निहारती है। बेचैन हो जाती है, हमेशा स्याम ही नजर आते हैं। 'जबले सपना में निहारेव ओ, तबले मिलबी नई मांख ओ।'

'नन्द गोंटिया के बेटवा हर ओ, मोर आइस आँखिन के तर ओ, तब ले चिटको नइ भूलत हौ, मोर ऑखिच आँखी मे झुलत है।'

6. **अत्यन्त प्रेम की अभिव्यंजना -** 'कोनो जतन लगाय के, देते स्याम मिलाये, धोकर-धोकर के रात दिन, परतेव तोरेच पांय।।' में प्रिय से मिलने की अधीरता परिलक्षित होती है। 'देखे बिन नन्दलाल के, अब तो नइ रहि जाय, जात सगा डर छोड़ के, धरिहौं मोहन पांया।' में प्रेम की अभिव्यंजना की गई है।

7. मोहिनी का वर्णन- जादू, टोना, मोहिनी का भी वर्णन कवि ने अपनी कृति में किया है। 'मन मोर चोराय सु लेइस है, मोहिनी कुछू थोप थीं देइस है।' में श्रीकृष्ण के द्वारा राधा पर जादू किए जाने का वर्णन कवि करता है।

8. **वियोग की पराकाष्ठा** – कवि लिखते हैं कि श्रीकृष्ण के बिना राधा व गोपियाँ बिल्कुल भी रह नहीं पा रहीं हैं। राधा अपनी सखी से कहती है कि 'मैं गोई। अब कौन उपाय करौ, के कहूँ दहरा बिच बूड़ मरौ, मोला कोनो उपाय नई सूझत है, ये गोई गोकना अस गूदत है।' इन पंक्तियों में वियोग जन्य दर्द की पराकाष्ठा अभिव्यक्त हो रही है।

9. **गोपियों की आभूषणप्रियता** – गोपियाँ जब श्रीकृष्ण से मिलने जाती हैं तो वे अपने सभी अंगों में आभूषण धारण करती हैं। कोई भी अंग सूना नहीं रहता। 'पहिरे रंग रंग के गहना, ठलहा कोनो अंग रहे ना।' से स्पष्ट है कि गोपियों का हर अंग विभिन्न किस्म के आभूषणों से सुसज्जित था।

10. **गोपियों का शारीरिक वर्णन एवं उपमानता** – कवि के अनुसार, गोपियों का जवाब देते हुए श्रीकृष्ण मन्द-मन्द मुस्कुराते होते हुए उनके अंगों की तुलना इस प्रकार करते हैं- 'केरा जांघ नरूछ है मोती, कही बांचिही कोनो कोती, कंवल बरोबर हाथ देखाथे, छाती हंडुला सोन लजाथे, बोहरी समुंद हवै पंडकी गर, कुंदरू ओठ कांत दरमी घरा।' राधा व गोपियों के विभिन्न अंगो की उपमा केला, सोने की हाण्डी, समुद्र, कुंदरू, सूरज, चाँद, तोता, सर्प आदि से की गई है।

11. **नारी स्वभाव का वर्णन** – आभूषण प्रियता, रूठना, सपने में पिया-मिलन, मोहिनी जैसे अस्तित्वहीन क्रियाओं पर विश्वास करना, वाद-विवाद करना आदि नारी सुलभ गुणों का कवि ने अपने खण्ड काव्य 'छत्तीसगढ़ी दान-लीला' में स्थान दिया है। 'रीताइन सब सुनत रिसाइन, कब ले स्याम साव बन आइन।' में नारियों के रूठने की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है। 'मन मोर चोराय सु लेइस है, मोहिनी कुछू थोप थीं देइस है।' में मोहिनी जैसी क्रिया पर महिलाओं की विश्वसनियता उजागर होती है।

12. **आंशिक अश्लीलता** – कवि पं० सुन्दर लाल शर्मा के इस काव्य में कहीं -कहीं पर अश्लीलता परिलक्षित होती है जो आलोचना का विषय बन सकती है। स्याम मिलन की खुशी में जब गोपियाँ वृन्दाबन की तरफ जाती हैं तब इनके पहनावे का वर्णन कवि कुछ इस तरह करते हैं- 'भरिन काछोरा रचो झन, बरती बाहिर आया उघरे - उघरे जाँघ हर, केरा असन देखाय।। अंत में श्रीकृष्ण जब गोपियों के अंगो की तुलना विभिन्न जड़- चेतन वस्तुओं या प्राणियों/पादपों से करते हैं तब उन्होंने गोपियों की छाती की भी तुलना कर डाली- 'छाती हंडुला सोन लजाथे ।' लज्जाजनक अंगों की तुलना की बात करते हुए भले ही कवि ने तुलना नहीं की, अपितु ऐसा करते हुए काव्य में अश्लीलता का प्रवेश करा ही दिया- 'अम्भो दू ठन बांचे पाही। फोर बताहों सुनत लजाही।।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. छत्तीसगढ़ी काव्य संकलन, संपादक - प्रो० रामनारायण शुक्ल, प्रकाशक- छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद, बिलासपुर (छ.ग.)।

****